

सम्युद्धचक्रसम्बलसमाधिः॥

आशा कर्मकाथि

378

ASHA ARCHIVES

सं. व.

ॐ नमः श्रीचक्रसम्बन्धनायः॥ ॥ ॐ श्रीः ह्रीं श्रीमन् वज्रसङ्गु नूव नच नन कमलाय संम्य
कला नावरा सन कलाय नमा ह्रीं नमः सङ्गु नन नमः सङ्गु नन नमः सङ्गु नन नमः सङ्गु नन नमः
नाथं प्रसिद्धम॥ ॥ वन्दरुवादि स मग्नं सन्ना नयं यति सयं सङ्गु नूयत्यसादयं स
माय हान सङ्गु व॥ श्रीमन् वज्रजकायजकिनीचक्रवर्तिनी॥ यथैश्वर्यनिकाधायः
जगन्नाथजगन्नाथनमः॥ यावन्मावज्जकिन्यकिन्नसंकल्पवधना॥ लोकाकम्पप्रवर्ति
त्यनावजिस्थानमः सदा॥ ॥ ॐ स्वरावस्तु सर्वधर्माताः स्वरावस्तु धाहं॥ ॐ भुवना

हान वज्रस्वरावात्मकाहं॥ ॥ ॐ श्रीः ह्रीं श्रीमन् वज्रसङ्गु नूव नच नन कमलाय संम्य
कला नावरा सन कलाय नमा ह्रीं नमः सङ्गु नन नमः सङ्गु नन नमः सङ्गु नन नमः सङ्गु नन नमः
नाथं प्रसिद्धम॥ ॥ वन्दरुवादि स मग्नं सन्ना नयं यति सयं सङ्गु नूयत्यसादयं स
माय हान सङ्गु व॥ श्रीमन् वज्रजकायजकिनीचक्रवर्तिनी॥ यथैश्वर्यनिकाधायः
जगन्नाथजगन्नाथनमः॥ यावन्मावज्जकिन्यकिन्नसंकल्पवधना॥ लोकाकम्पप्रवर्ति
त्यनावजिस्थानमः सदा॥ ॥ ॐ स्वरावस्तु सर्वधर्माताः स्वरावस्तु धाहं॥ ॐ भुवना

स. च.

चला॥ हूं हूं हा॥ माला॥ रुद्र रुद्र हूं॥ यचिं वा कादका॥ ॥ ओं हूं स्वाहा मा वज्र॥ ओं
हा स्वाहा॥ घ॥ वज्रसूत्रसंग्रह रुद्र वज्र नल मनूक न वज्र धर्मग्रहा ययिः
वज्र कर्म कला रुद्र॥ ओं नार्किं जं हूं ३ नार्किं नाज हा॥ ॥ कमला वर्क संखा धिष्ठा
न॥ ओं श्री वज्र हूं हूं नूक हूं हूं रुद्रा किनी डाल सन्वल स्वाहा॥ प॥ ध॥ यचा न पू
जा धां क्रमन॥ ओं स्व॥ धु॥ ना हूं हूं रुद्र॥ ओं स्व॥ धु॥ ना हूं सर्व विष्णो नूक दय हूं॥ ओं वज्र
ग॥ ध॥ स्वाहा॥ ग॥ ध॥ ओं वज्र यू॥ ध॥ स्वाहा॥ यू॥ ध॥ ओं वज्र यू॥ ध॥ स्वाहा॥ यू॥ ध॥ ओं वज्र

2

दीय स्वाहा॥ दीय॥ ओं वज्र ने वय स्वाहा॥ ने वय॥ ओं वज्र लाजाय स्वाहा॥ लाजा क्रम॥ ॥
स्वानुता किं लख सथूता ववलि सगथ॥ ओं अकाना मूख सर्व धर्मा ध॥ माद्यनूत्यन स्वां
जुः हूं रुद्र स्वाहा॥ वलि अधिष्ठान॥ ओं स॥ प्रनिष्ठि गवज्र स्वाहा॥ ॥ मधुला धिष्ठानः
ओं जूः हूं॥ म॥ ध॥ धन॥ ओं हूं हूं जिं अरु व स्वाहा॥ या॥ ध॥ धन॥ पून या॥ ध॥ धन॥ राव
य॥ जी काने धय मरां जन॥ मा काने ध॥ मा मकि क॥ धि॥ रुद्रा वज्र २ हूं धनं हूं
काने ध॥ अक्रा प॥ क॥ धि॥ रुद्र वज्र वज्र हूं ग॥ स॥ यू॥ ध॥ गन महाना गुन ड विरुगय

सं च

ॐ नमः ॥ यूनह हाजिं अरुवं स्वाहा ॥ ॐ सर्वरुद्रकामिनी सर्वरुद्र ॥ धनीगुप्तवर्जितिका
॥ धनीसर्वद्वयव्यापिनि ॥ धय २ ॥ हकानहननवर्षुहाकानगन्धनाभनंजिं
कानधर्वजहंगावज्जकानधज्जमृनज्जमृनप्रवक्ष्यन् ॥ ननवामहससं प्रकृति
लज्जिज्जुलियनाकहसूनरुमिज्जधिसानं ॥ ॐ चरुमहं ॥ चरुविंशतिज्जुग
न्यास ॥ यूं ॥ कयाल ॥ ॐ ॥ चसयाल ॥ ॐ ॥ काययं ॥ ॐ ॥ मिवायां ॥ ॐ ॥ दयाजां
यं ॥ लो ॥ कागिका ॥ दं ॥ मिवातियां ॥ मां ॥ वाहनियां ॥ कां ॥ याकानियां ॥ ॐ ॥ इति

३

पां ॥ ॐ ॥ नुरु ॥ कां ॥ कायुवाका ॥ कां ॥ रयाल ॥ लें ॥ कथू ॥ कां ॥ नूग ॥ जिं ॥ चययवाध ॥ यें ॥
लिग ॥ गु ॥ रयाधा ॥ हां ॥ रयानियां ॥ लानानियूं ॥ तें ॥ पालियचिंतिरव्यं ॥ तिं ॥ पालि
तियां ॥ मं ॥ काहायचिंडुलानिरव्यं ॥ कें ॥ यूलिनेगल ॥ ॥ ॐ पिअययिअक्षयक
उकसीयकुंदमलायकमलायक ॥ ॐ ॥ नयममममति ॥ ॐ ॥ चर्य ॥ नमांज्जुग
न्याम ॥ ॥ ॐ ॥ ह ॥ हदय ॥ नमहि ॥ मिनि ॥ स्वाहा ॥ मिखा ॥ वाचनय ॥ स्कन्द
दय ॥ हं ॥ हा ॥ नउदय ॥ रूर्ह ॥ सर्वज्ञ ॥ ॐ ॥ ना ॥ हायां ॥ हदय ॥ जिं ॥ मा

सं.च.

[illegible]

8

नथगनधी हनूकवज्जु चक्रुषमाहुवजी. अरुयाधववज्जि. घ्राद्ययावज्ज्यावजी
 वक्रुयनागवजी. स्यर्षमांसस्यवजी. सर्वाङ्गवैभ्यवज्जि. ॥ यथिवीधमन्यान
 नि. आयधममानधी. ॥ गङ्गाधनुनाकर्षति. वायुधनुयमनृक्षधन. ॥ आकाश
 धनुयमक्षालीनि. ॥ यथास्त्वध्वं कानदवनाहंति. ॥ यूनमाञ्जेलिकालियकि
 मध्वलकानयनिधनस्यमधुसं. ॥ तस्मध्वं कानयनिधममनरुगवक्रु
 हवज्जुषट्पुङ्ग. ॥ यथमधुजास्यां वज्जवज्जयध्वधनं द्वितीयास्यां. ॥ खड्गगर्जनीः

सं. च.

यासंरुमीयास्या ॥ उमनूरववाङ्ग ॥ चतुमूरववाङ्ग वामः ॥ ४५ ॥ म. नकाः दक्षिणायीनं
विराव्य ॥ इति नस्मिन्नुचतुमुष्यस्त्रिवासरुतादिचतुनामं ॥ ततात्यन्तचतुर्द्वी ॥
काकास्यादिक ॥ विदिह पूर्वार्तनयो नस्मिन्नास्मिन्नुचतु न यमदाद्यादि ॥ धी धी
वस्तुति ॥ आशो यदस ॥ वामहस्तास्यागुष्टमङ्गनीस्याकादिकादत्वा ॥ ॐ सुमृति
सुमृष्ट ॥ ॐ गृह २ ॥ ॐ गृह २ ॥ ॐ गृह २ ॥ ॐ गृह २ ॥ ॐ गृह २ ॥ ॐ गृह २ ॥ ॐ गृह २ ॥
गाङ्ग २ ॥ काकास्याकाका ॥ उल्लास्या ॥ ॐ नस्यानका ॥ ॐ कला

स्यापिगा ॥ यमगादिहृष्टयीता ॥ जगद्व्यायावामहस्तकपालयनिशमन सुमृनाङ्ग
कीलननारुनंधस्तनाकोनउर्धयाभनूपकंधुत्वा दीक्षिहस्तकनीटयनिशमनवज्ज
मूर्जलहस्ता ॥ तदनूयानिनतसूर्यमधुलम ॥ इका नेष्टविश्ववज्जइकानाधिष्ठीत
॥ रुद्रसिनीयवरुलपमाधुवज्जका ॥ इका मूर्धनरधगमवज्जमयिरुमिद्विराव्य ॥
ॐ मदिनीवज्जिरुवज्जवन्धइइइइ ॥ ॐ वज्जपाकानइवइ ॥ ॐ वज्जयज्जराइयइ ॥
ॐ वज्जविमानइवइ ॥ ॐ वज्जसलज्जालसग ॥ ॐ वज्जकालानलाइइ ॥ ॐ मदिगवंध

सं. च.

न॥ ॥ प्रकानवर्हिहं विमानि वन्य नमः ॥ अथ कुरु मन्त्रं नित्यं सितान् ॥ ॐ उदिविघ्ना
नृहृदयकीलनधत्वा वज्रमूङ्गलमाकारयन् ॥ अथ घटाटय २ सर्वदुष्टान् हं हं हं ॥
ॐ कीलय वज्रधनम् ॥ अथ याते सर्वविघ्नविनायकानां काय वाक् चिरुवज्रान्ते
कीलय हं हं हं ॥ ॐ नित्यकीलनमं ॥ ॥ ॐ वज्रमूङ्गलवज्रकीलनं ये माकारय २
हं हं ॥ ॐ अकारय मं ॥ ॐ नित्यं विघ्नरावयन् ॥ ॐ नित्यं नकाचकतिराधि ॥ ॥
नमस्ते हृदयस्व हं काननसिमासा रङ्गगदर्थकत्वा मे कतिराशुवनगत्वा नमः ॥

नादिसंसिद्धिश्च हनूकरुगवगवन्तसमापन्नमधुलपयं यथप्रतः ॥ नमः ह्रीं ह्रीं नस्ति ८
मालातीनां कृष्णकृतचक्रमाकारमदृष्टमूर्खमहिसंपूर्णसेमकुरु सयमधुलप
वसयन् ॥ समलसकृष्णमनामयितृपूजादवीहि श्वयुजयन् ॥ हं हं हं ॥ कालामूङ्ग
यादमयेन ॥ अथ च मनमं ॥ ॥ ॐ श्रीवज्रहं हनूकरुप्रवनसंस्काराय पायं अर्थ
अचमनं येनिरुक्त्वा हा ॥ ॐ हं वं हा ॥ पूष्यत्या ॥ ॐ श्रीवज्रहं हनूकरुहं हं हं ॥
कितीजालसम्बनस्वाहा ॥ हृदय ॥ ॐ ह्रीं हं हं हं हं ॥ ॐ हृदय ॥ ॐ वज्रवं नीचनी

सं. च.

यहं हं रुद्र॥ इव्या रुद्रय॥ अं सर्ववृक्षजकिनीयहं हं॥ इव्या रुद्रय॥ अं जकिनीयहं हं
रुद्र॥ पू॥ अं नाभं रुद्र॥ उ॥ अं खलुनाहं रुद्र॥ य॥ अं नृपिनीयहं रुद्र॥ द॥ नृति
दिग॥ अं वाधितिनामृताखुहं रुद्र॥ नृतिविदिग॥ ४॥ पू॥ अं कन२ प्रचरुहं रुद्र
॥ उ॥ अं कन२ वधुकीहं रुद्र॥ य॥ अं वध२ प्रतामनीयहं रुद्र॥ द॥ अं जमय२ मेहा
नामयहं रुद्र॥ अ॥ अं कालय२ वीनमतिथुहं रुद्र॥ ने॥ अं हं रुद्रवर्तनियहं रुद्र॥
॥ वा॥ अं हं रुद्रलेकवनीयहं रुद्र॥ नृ॥ अं रु२ मेकायहं रुद्र॥ नृतिचिरुनके॥

अं रुद्र२ नेनावनीयहं रुद्र॥ अं रुद्र२ मुसाहेनवायहं रुद्र॥
॥ पू॥ अं यच२ वायवगहं रुद्र॥ द॥ अं रुद्र२ वसुधिनानमालावलम्बिनसुनारुकी
हं रुद्र॥ अ॥ अं गृह२ सुफयानलगुमुकुंगसय्यम्यातुहं रुद्र॥ नृ॥ अं मादुवीयहं रुद्र॥ ने
अं अकय२ सुतडहं रुद्र॥ वा॥ अं हिं२ हयकहं रुद्र॥ नृ॥ अं रु२ रुवगभनताहं
रुद्र॥ नृतिवाक्कु॥ पू॥ अं क२ चक्रवर्गहं रुद्र॥ उ॥ अं हो२ खलुनाहं रुद्र॥ य॥
अं हिं२ मोदनीयहं रुद्र॥ द॥ अं हं रुद्रचक्रवर्तिनीहं रुद्र॥ अ॥ अं किलि२ सुवलेहं रुद्र
॥ ने॥ अं मिलि२ महोवलेहं रुद्र॥ वा॥ अं हिलि२ चक्रवर्तिनीयहं रुद्र॥ नृ॥ अं धिनि२

सं. च.

महावीर्यं हंरुट्॥ न्तिकायचक्र॥ पू॥ अं काकास्याय हंरुट्॥ ३॥ अं उलूकाय हंरुट्॥ य
अं भूनास्य हंरुट्॥ ४॥ अं भूकनास्य हंरुट्॥ वा॥ अं यमजीह्वय हंरुट्॥ ने॥ अं यमोष्ठि
य हंरुट्॥ वा॥ अं यमउच्छ्वस हंरुट्॥ न्॥ अं यममर्धनाथ हंरुट्॥ दोनकानयागिनी
मधुल॥ पू॥ अं चक्षुगहाय स्वाहा॥ ३॥ अं गकनाय स्वाहा॥ प॥ अं कालाकुलाय स्वा
हा॥ ४॥ अं कलंकनवाय स्वाहा॥ अ॥ अं अटनहासाय स्वाहा॥ ने॥ अं लेखीवनद
नासनाय स्वाहा॥ वा॥ अं धानान्धकानाय स्वाहा॥ न्॥ अं किलिकिलासवाय स्वाहा॥ न्

नियत्तपुहानपूजा॥ वा॥ अं वज्रवीन हं॥ अं वंरं अं॥ अं वज्रमृ
दंग हं॥ अं वज्रमुखं अ॥ अं वज्रलाभ हं॥ अं वज्रमाल्यं॥ अं वज्रगीतं॥ अं वज्रनृप
अ॥ अं वज्रयूषं॥ अं वज्रधूयं॥ अं वज्रवलाकिनी हं॥ अं वज्रगरभं अ॥ अं वज्रादर्शनं
हं॥ अं नसवज्रं॥ अं पर्यवज्रं॥ अं धर्मधनुवज्रं॥ प॥ अं वादनमृति॥ अं वज्रसु
खसंग्रहण॥ अं वज्रनलमनूकनवज्रधर्मग्रहायनी॥ अं वज्रकर्मकुलो रुवा॥ अं वज्र
रुहं॥ अं वज्रकिनाज हं॥ मृ॥ सर्वरुहानसदा हं॥ गदर्थपसादकचिन्तामहीनविरु

सं. च.

नं श्रीसम्बलं नमस्तुते ॥ व्याकविश्वमहाह्वानं सर्वस्मिन्सदास्मिन् ॥ कृपाकारं महानोडं
श्रीसम्बलं नमस्तुते ॥ मन्त्र ॥ तर्क्यदा ॥ अं नमो गवर्गविनवीने भवनाय हुं रुट् ॥ अं नमो
हाकल्याणि सान्निधाय हुं रुट् ॥ अं नमो जयनकुटाकयसेनवाय हुं रुट् ॥ अं नमो
डाकना नोडलीवधमूर्वाय हुं रुट् ॥ अं नमो सहस्रगुजराय हुं रुट् ॥ अं नमो
अग्निभूलवदाक्षनाय हुं रुट् ॥ अं नमो व्याघ्रवर्माय हुं रुट् ॥ अं नमो
धूम्रांधकानाय वयूवाय हुं रुट् ॥ हस्तयूजा ॥ ॥ वामकनमस्त्वनकयचदल

कमलंधात्वा ॥ पूषा न्याम ॥ अं वं वज्रवानाहि हुं रुट् ॥ अं हां यां यामिनीय हुं रुट् ॥ अं हिं मां
हिनीय हुं रुट् ॥ अं इं इं संवाननीय हुं रुट् ॥ अं ईं ईं संजसिनीय हुं रुट् ॥ अं रुट् २ चदि
काय हुं रुट् ॥ अं ह वज्रसत्वाय स्वाहा ॥ अं नमो जिवनाचताय स्वाहा ॥ अं स्वाहा यमन
स्वनाय स्वाहा ॥ अं वा विट् हुं नलसंभवाय स्वाहा ॥ अं हुं हुं हा वज्रस्य स्वाहा ॥
अं रुट् २ हुं यनमाभयवजाय स्वाहा ॥ कनमूदिमस्त्वनकयचदल ॥ यश्च भयवान
यूजा ॥ मूर्ति ॥ कस्यानप्रवृत्ताननाधिककनाक्षालावलिनागृहाखदाक्षी मूर्वी महास्

सं.च.

खकनावालाकीविस्वानूय ॥ ॐ भूमि सूर्यरुद्रगन्धर्वाजययनाश्रीवज्रवावाहिका ॥ लावनप्र
दामाभिसुन्दरुनूपेष्टीवज्ररुन्निर्मितं ॥ योमित्यारवल्माहिनीरुगवनीसंचानी
निसर्वदा ॥ सजसितसुखायनासूविमलायागिध्वनीचन्द्रिका ॥ चत्वारोऽङ्गसक
स्वानुमूर्खीनीलाभितारगनिनी ॥ ॐ माधूमसधूसनाचसगनंवन्द्यदंगंवयं ॥ द्रव्य
नर्प्य ॥ ॐ नमो रुगवतं वं वज्रवावाहियं रुद्र ॥ ॐ नमो रुगनं हां यामिनी अङ्गि
अयनाङ्गिगाउलाक्यमाननं रुद्र ॥ नमो रुगवेतं हिं मां हिनी सर्वरुद्ररुयावह

٩٠

महावज्र हं रुद्र ॥ ॐ नमो ॐ जं वज्र सने अङ्गि म अय नाङ्गु व संकनी संवा नि न हं हं
रुद्र ॥ ॐ नमो ॐ हं विरभा खनि ना खनि का धनि कुलालिनी ॐ हं रुद्र ॥ ॐ नमो रग वने के
ट रुद्र चरुिकाया मानति स प्ररु दनि विनाङ्ग हं हं रुद्र ॥ ॐ नमो येने अङ्ग विरय रुद्र
निस्सु मेनि मा हनि थ हं रुद्र ॥ ॐ नमो वज्रिनी वज्रवाने ही महा यागिनी का मधनी
खज्रा हं हं रुद्र ॥ रग वने चेमन मंछेन सै ता क्रु न हं हं रुद्र ॥ ॐ नमो हं हं रुद्र ॥
नतो पाप दभनो कुरुको निरमनूमा दित मघ मरि विल निहित दोषानां प्राग्दभया

सं. च.

मिपूननयूननकनधंसम्बलंविनरधश्रवकस्वङ्गिनीरुमडिनसूतसंरुतानिकु
भलानिअनूमादिनानिवाधेसंम्यकयनिधमयामिडिननलादिगिनयंभन
धमावकानास्मिन्सर्वरावेनवाधिविरुविनरधअनूरुनमार्गतथास्थव्यत॥
॥ तिग्नादिथागप्रथमसमाधि॥ ॥ तदनूमेषीकनूधमूदिनायक्राचकुर्व
क्रविहानोवेराव्य॥ ॥ अस्वरावमुद्रासर्वधर्माधंस्यरावमुद्राह्युयताहानव
अस्वरावात्मकाह॥ ॥ तिरुमाउनुवेतिष्ठतूयाधिसंरावयूनधम्॥ ॥ तगाप्रतिधान

११

वक्षान्भुत्यतानाप्रतिवृद्ध॥ ॥ यंकानेदावायूमधुलं तिलधन्वारुंधजाकृतं॥ तडुय
निनकानेदाअग्निमधुलप्रिकाधं॥ तडुयनिलकानेदावनूधमधुलवरुनरधनध
धमकृतं॥ तडुयनिवकानेदायथामधुलचकुनसुमधुमृष्टायाभारितं॥ तडु
यनिसंकानेदासुमनूमधुलचकुनसुअधुमृष्टायाभारितं॥ तडुयनिउंकानेदाकू
दगानेचकुनसुचकुर्धानचकुस्तानेदाभारितंमहामाकूयूनधंवेलाचनस्वरा
वंहानार्थहानकूचेलिककर्म्ममिषेनयय्यकं॥ तडुयनियंकानेदाविश्वदलय

सं-च-

सं-तत्स-ध्वं कं कामदाविभ्ववजं॥ तत्स-ध्वं यं कामदायमाष्टदलं॥ तुडुयनिज्जालिका
लिङ्गिगुरदानचन्द्रमधुलं-सूर्यमधुलं-तथासं-ध्वं आकामसु-कानसु-नक्षत्रं
हनक्षत्रमक॥ ततः सर्वयानि शतं-आना-ध्वं यं मधुलं॥ श्री-**हनुक**समो मधु-
लयं मा-लो नं तावयन॥ तगात्मानं कृष्णं चतुर्भुवं-मूलमूर्ध्वं कृष्णं-वामं ध्वं
यश्चि-मनकं-दक्षिणं ध्वं वि-कृतातनो॥ उद्धा-कटरीमधं-प्रतिमूर्ध्वं नकवर्तु
नक्षत्रं-विभ्ववजं-कितमालिनं-ऊयमकुटितं-वामं वलितार्धचन्द्रध्वनिनं-

१२

दक्षिणं भुक्कमुष्टु वज्रमालाग्रनिगं-यच-कपालध्वनिधं॥ द्वादशभुजं-प्रथमं मु-
कुटजालि-कृ-धं मुकुटध्वनं-वज्रवज्रय-ध्वनिधं॥ द्वितीयं मुकुटध्वनं-तग-चर्मव-
धनं॥ तृतीयं मुकुटध्वनं-कम-नूरव-ध्वनिधं॥ चतुर्थं मुकुटध्वनं-कन-दिनक-
पूरु-कपालध्वनं॥ पंचमं मुकुटध्वनं-यन-मु-या-ध्वनिधं॥ षष्ठं मुकुटध्वनं-
गि-भूल-व-मि-नध्वनं॥ सप्तमं यच-ध्वनिधं-मालाध्वनिधं॥ अष्टमं चर्म-नि-
वासनं॥ नवमं वान-वि-रत्न-नीड-हास्य-र-यानकं-कनू-ध्वनिधं-नवनाम्

सं. च.

नसाविता कछि कधुल कयून मिना सधियरु यविनरुस्त चमि ॥ घनू जामू डिरुन
विमधुल वाम दक्रिष्टा ला यमि नरु नव कालि नाणि वाम कधुल यूग लया अलि
रास नस्ति नरु गवन रुता वयना ॥ ॥ तग वती वज्र वाना ही नक वधुल मुकुर क
भणि ने गा ॥ एक वक्रा दिग म्व ना रे धु मदि न कर्हि मखला ॥ दि गुडा वाम गुजन न
कयू धु कया लधन ॥ दक्रिष्टा गुजन दुधु मर्हि न कर्हि का ॥ भुव नू धि मान ना उं पा द
यन रुग वन समा वा कानू ना गय मि रुग वती रा वयना ॥ ॥ नरु सम य चक्रु र

१३

नन गि क ना स नं विष्वा दल कल स नू यं मा रुड मधुला नूरं विष्वा वधुल गी चक्रि
नू यं धी का ना धि धित नला वलियो निवृत्त महा सरुव का या लस कं चिरु वा क का या
यस रुता वयना ॥ नरु पूर्व दल ग कि ती निला उरु न य उ ला मा रु नि ता यश्चि
मय उरु वर धु ना ही न का दक्रिष्टा यरु नू यि नी पी मा ॥ मा रु स वा नू रा सं स्ति मा
एक वक्रा च उ गुडा वाम कया लख वा रु दक्रिष्टा उम नू कर्हि का ॥ उरु क ना ल
वद न गि ने गा मु क क मा य च मू डा गु धि ना ॥ विदि दल वू च ला न वा धि चिरु क या

सं. च. लिनी ॥ ॥ नमो हि चिरुचक्रं काननं अष्टान आयमधुला नूटं कृष्णं हकानाधि
 क्षितं वक्रावलि यनिवृत्तं धर्मकायात्मकं स्वर्गनूपं खचनिस्वरावं चिन्मयता ॥ नमः
 पूजः पूर्वाय पूजिलमल खद्यु कपाल प्रचन्द्रादवी ॥ २ ॥ ॐ उ. यन्मि मो नमः
 लधन मलकं कोल चद्यु क्रिदवी ॥ ३ ॥ ॐ उ. यन्मि मान वडियानक काल प्र
 लामति ॥ ४ ॥ ॐ उ. दक्रिधन आर्वु उविकट दृष्टि महानासा ॥ ॥ नमि वी ० १४
 प्रमदिता हनिदान यानमिता दुःख हान ॥ १ ॥ ॥ ॐ उ. अरुग्नया नमः गजेवर्यास्तु

विंयुं वां नं कां विं मं हं रे नं वं हं यं कं ॥ ४ ॥ ॐ उ. जेभाना लहिमाल यविनूपा
 कृ. खगमनना ॥ ॐ उ. यद्युदाह स्तुतुं या मुनि प्रह्लाया नमिता अनूत्यादहान ॥
 नमि वा कृ ॥ ॥ नम वा कृ काय चक्र ॥ ॐ काननं अष्टानं वायूमधुला नूटं मु
 कं कं कानाधि क्षितं चक्रावलि समलं कनं निर्मलं कायात्मकं पामाल स्वराव या
 मालना ॥
 नमः सर्वना वी नमति ॥ २ ॥ ॐ उ. ते नमः न नाम भव्या अतिगाह सर्वना ॥ ३ ॥

सं. च.

ॐ वायु व्यान दवी कोट वज्र प्रह लक ध्वनी ॥ ४ ॥ ॐ वायु व्यान माल व्यावज्र द
ह इमच्छाया ॥ ॐ ति उय पी ० विमलारुमिभिर्न पानमितासु मूदय हान ॥ ॐ ति वि
रुचक ॥ ॥ नतस्वीहि वाकचक्र आका नतिर्जातं मद्यानं नडा मधुलानूरं नूकाना
धिष्ठितं ॥ नक्तयमावलियनिदगुं स म्हाग कायात्मकं मर्षस्वरावं रुचनीस्वरुवं
रावयत ॥ १ ॥ ॐ कां ऊं पूर्वा न काम नूय अकलिके जेना वति ॥ २ ॥ ॐ ऊं
उरुना न विदिया न वज्रगिल महार नवा ॥ ॐ ति क्रु प्रहा कनिरुमि कानिया न

मितीति गाध हान ॥ १ ॥ ॐ ऊं यन्निमानशी मक्रनो महावीन वायुवग ॥ ॐ ऊं
दक्रि साभ का मूलायां वज्र हं कानसु नारुकी ॥ ॐ ति उय क्रु उज्ज विष्मतिरुमि वीय
पानमिता मार्ग हान ॥ १ ॥ ॐ ऊं अग्रया न कोलि र्म मूरुडा म्हा माद वि ॥ २ ॥
ल ऊं न म्हा न लया क वज्र प्रह सरुडा ॥ ॐ ति रु धा हे सु रि मू र्वी रु मि ध्वान
पानमिता क्रु य हान ॥ ३ ॥ ॐ ऊं वायु व्यान कां वि महार न व हय क रु र्मु ॥
॥ ४ ॥ ॐ ऊं जे म्हा ना न हि माल य वि नू यो क्रु र्वग न ना ॥ ॐ ति उय रु धा हे रु उ र्ज्या

सं. च. स्तुतिप्रहाराय नमिनाञ्जुन्यादहनं॥ ॥ ग्लितिकाकचक्र॥ ॥ ननवाक्कायच
क्र॥ अंकानञ्जुन्यानवायूमधुलानूटमुक्तकेकानाधिष्ठितं चक्रावलिसमले
कर्त्तनिर्माहाकायास्तकयानालालस्वरावं यानालवास्तिनीस्वस्वनूपरावयेन
॥ १ ॥ पुः ऊः पूर्वानप्रेतपूर्वाम महाबलचक्रवेगम् ॥ २ ॥ गुः ऊः उरुमानेगुरुदे
वगायानलवऊः स्वराहुनीहा ॥ ग्लिमलोयकुडुगेनेमामहास्तुतिउवायुयान
मिनाधर्मैहाना ॥ ३ ॥ सोः ऊः यन्त्रिमाने सोनाष्टुर्ययीवसीदेती ॥ ४ ॥ स्रः ऊः

दक्षिणः सुवर्णदीपः आकाशगर्भचक्रवर्तिनी ॥ ॐ गिउय भलायक अचला
रुमि प्रदिष्टियानमिना न्वयस्तन ॥ १ ॥ नेने अग्नेयाननगमधी हनुक सवि
ना ॥ सिं ऊः ने नृणां नसि रक्षो यम नृपस्वन महावल ॥ ॐ नृसुभन साधु मागे रु
मिवलयानमिना सदा रुस्तन ॥ १ ॥ म ऊः वायू व्या न मे लो वलाचने चक्रवर्ति
नि ॥ २ ॥ कुं ऊः उभाना न कुलगाया वरुसत्व महाविष्यो रावयग ॥ ॐ गिउय
भभान धर्म मघा रुमि रुान याना नमिना येन चिरुस्तन ॥ ॥ ॐ नृकोयचक्र

स.च.

खड्गकपालादयावीनो. एकवक्त्राचक्षुर्भुजगणितग. जयमकृति. आलिंगशुभ्र
 वयनवर्जवर्ज्यध्वस्वस्वस्व. दक्षिणभुजमनूकं. यथामूर्धाविभुषिता. आलि
 यसनस्थिता॥ प्रचक्षुर्द्वया. एकवक्त्रादिभुजा. आलिङ्ग्य. कपालहस्ता. द
 क्षिण. फर्लिका. गितग. गोडनूयि. मूकक. अहययागसमायन्नामहा
 नागानूनागनादिगम्वना. यथामूर्धाविभुषिता. दव्यनादवीनो. चक्रनायक
 १६६ आरुनधरावयन॥ ॥ नमः पूर्वधाने काकास्यानीला उरुनधाने. उलूका.

॥ अ. हनिता ॥ यश्चिन्मदाभस्वानाम्भानका ॥ दक्षिणद्वान्भूकलाभ्ययीता ॥ अरुण
नेऽस्य वायुव्ययेभानका ॥ दक्षिणमगदिहृष्टयीता ॥ यश्चिन्मदुनीयीतनका ॥ य
मदक्षीनकभ्यमा ॥ यश्चिन्मदर्थनीभ्यमदक्षीनवयता ॥ ॥ एतायामित्याः उक्तवः
क्ताः चतुर्भुजाः प्रभालिगः सवासना निवसन्ता यश्चिन्मेडाविदुषिगु कया लखव
मं वामे च दक्षिणे उमनूकलिका दक्षिणकलालवदना विराव्य ॥ अ. आः ह्रः शुक्र
नका कृष्टवधुः सिलकल हृदयवदना विराव्य ॥ स्वर्गः मध्यः पातालः एकमूर्ति

सं. च.

रुव्यक्रुधमता ॥ ननपूर्ववतुअंगम्यासा ॥ ॐ आः हं सर्ववीनथागिनीकाय.
वाङ्मिरुवडेस्यरावात्मकाहं ॥ ॐ वज्ररुद्रा सर्वधर्माहं ॥ वेङ्गभुजाहं ॥ समानिगह
नचक्रमाकाभदरमहद्व्या ॥ ॐ वहा ॥ आत्मानिमधुलेषूवाकृष्या ॥ योगभुजासर्व
धर्माहं ॥ योगभुजाहं ॥ नदनूअरिषिचक्रुमासर्वविनयागिनी ॥ श्रीहनुकवज्रस्वरा
वात्मकाहं ॥ यथाहिज्जानमाउदात्तापिता सर्वतथागततथाहं स्ताययिष्यामि ॐ
शुदिव्यनवानिधा ॐ आः हं सर्वतथागततथाहं स्ताययिष्यामि ॐ ॥ ननमकूटा ॥ अ

१८

अरिषकं महावज्रं ॐ धनुकं नमस्कृतं ॥ ददामि सर्वबुधानां त्रिगुणकालयसकृवं ॥
ॐ दम सर्वबुधानां त्रिगुणकालयसकृवं ॥ ॐ दम सर्वबुधानां यूप्याकं पूजनाय च
॥ मकूटयत्ररुद्राहं ॐ सर्ववृद्धवृजमहिमहामकूटप्रतीकस्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ व
ज्रधर्मधनी अरिषीचक्रुं ॥ १ ॥ ॐ वज्रवज्रनि अरिषीचक्रुं ॥ २ ॥ ॐ नेत्रवज्रनि
अरिषीचक्रुं ॥ ३ ॥ धर्मवज्रनि अरिषीचक्रुं ॥ मरुध ॥ ॐ कर्मवज्रनि अरिषीचक्रुं
अ ॥ ॐ मकूटयत्ररुद्राहं ॐ अरिषीचक्रुं ॥ ॐ अरिषीचक्रुं ॥ ॐ दम

सं. च.

सर्ववृक्षानां गृहवज्रस्य सिद्धयः ॥ वज्रः ॥ अं वज्राधिपति त्वामहि विंचामि तिसृषु वज्रसम
यसत्त्वहो वज्रघट्टः ॥ घट्टः ॥ सर्वसत्त्व त्वामहि विंचामि वज्रनामाहि विंचकः ॥
अं श्री हनुक नाम तत्त्वागतत्वं सर्ववत्त्वं ॥ नाम ॥ अं वज्रसत्त्वसंयुता गता वज्रनलम
नूतन ॥ अं वज्रधर्मसंयुता यती अं वज्रकर्मकलाहव ॥ अं लिंगमृदो ॥ अं श्री हनु
क वज्रस्वरुवात्तकीहं ॥ पून अं कर्षण ॥ पून त्याग ॥ यश्च शयन पूजा ॥ घट्टः
वादन मुनि ॥ ॥ श्री वज्रसम्बन्धसम्बन्धले वज्रज कवि नमो नीपवर्ग विनगर्भा

१८

विनाज्जकालातना ललितवाहयुग्मयगुधकानूयमिहयनमामितलंघियमं ॥ या
लौकलस्यरुववन्धतशदकानि विरुणनिता वृद्धयनिभुद्धमनिनसाने प्ररक्ष्यदा
घः ॥ नितनामिलवाधनूयसंयुक्तमामितवयादसनाउन्नत ॥ ॥ नितनधुलगा
ज्जगो नोमदिताये समाधि ॥ ॥ नताञ्जलिकासियकि यचरनस्मिकासु नदादेव
तावुद्दानचानयनदक्रिणवायूनानिभुक्तजगतिचक्रिण्य ॥ अनादिस्तिसिद्धिविनः
वीनानिसननीसुखेत्वा मनासा पूरुन प्रवम्भ नारोपति विन्वहृत्वाहाका न चन्द

सं. च.

मधुलं सुखाविचिन्म ॥ कज्जमिदिमिभुक्कं कानचकुर्विजयनिशतएगवन्न सहुजसाम्ब
नेभुक्कवधुमालीयास्तनरुक्कामाकाभिलिखीतचिरम्भहसं द्विजुजं कवकुवज्वज
यदभधनं मुरयाभ्यां वज्जकयालधिलिने द्विजुजं एकमूरवनकवधुवज्जवानाही
मात्मानं विहाय ॥ तथा माया सूननधनिमाहुष्यउधकुका नमकचकुक्रमनरा
वयता ॥ उगतिम्भम्भानि सनयचके समयचकु कायचकु कायचकु वाकचकु
वाकचकु चिरुचकु चिरुचकु जकिनीषू जकित्यादय यथयथानवविज्जषू

20

रुगवन्मूरवरुगवपो द्विजुजं नमप्रहायाः प्रतिष्ठोरावनिया रुचसमयसूनन
महावागडवायठनेधवयनीनने सिद्धुमानका हानंभहसं कानमहासूरवम
यरावयता ॥ कज्जुकानाडुकान हकान हकान हकानं भिनसिभिनार्धचउज्जु
चन्दीवन्वनेनादं चवालायमनसहस्ररोगनूयचिरुयता ॥ निर्विकल्पमहारवम
यचिरुनिनूययता ॥ स्वदरम्भमिदिमिभुलचकुमधिमुच्येता ॥ पूर्ववत ॥ आकर्व
हयाद्यादिपूय्यपाये ॥ ॥ यलायं सुमि ॥ ॥ न्निमहायागेतनीयस्तनाधिकिचि

सं. च.

सुखाय मूर्खानि गम्य स्वनाशे प्रविश्य वज्ररागय मगृहीत्वा अत्र धृतिमा
रुगतास्थाय रवे गंगी मूर्खानि मृत्पु मूर्खानि प्रविश्य नादवीलीय पुन रुमातु दुः
ष्टाय सर्वं रुमं विराव्य ॥ रागवती रागवत्या मूलमं गरायां जायया दिति ज्ञाय विधि
॥ पूर्ववत् ॥ आ. पा. पू. य. ला. घ. मृति ॥ ॥ तमा बलिना लरुता ॥ ॥ पूनगायका
नन वायु मे धुल गडुय नि लका नैत अग्नि मधुल गडुय क्रीक्रीकान नमनि नगु

21

कुपु मरुतु नु मूडडि नय चलि का घवस्ति तं यमरां ऊनं गडुय कोदिकं ॥ ॐ ॐ ॐ रवं
हं लां मां यां तां वं कान जाधि कितं यच मृत्तय च पदीयं नूयानि प्याय वायु प्रनि
नक्षालि नाग्नि नाय विना न विज्ज क नूादिक महिन रा नूवर्धु देव नूयं रुद्धा गडुय नि
यान देव धुवि नरु मायां रुनि ता हुं रा वाध मूर्खानि मय यधु कुरव वांग विन सति
नद यान वधु मि ति रुतं च रुद्धा गडुय नि अलि कालि यनि सत ॐ ॐ ॐ कान र्पा अ
नूक म्पेन यानि ए चक्र मय नी ए च द वना र्ण ने रुज्ज गदध कृत्वा से कला मृग

सं. च.

नसमानियसमायहि पूर्वकडविरुय॥ यथायथान्वविज्जप्रतिष्ठा रावनि या॥
ततः अंकानादि कम्पना विलिनि तमवला क अकृ नना धिष्टाय ततः इलामूपाव
ध्वा॥ इकानेन पूर्वकं रगवतं सयनि वान अकर्वथत् ॥ ॥ अकर्वथे मूजामा
हा॥ ॥ इत्वा गुयं थो खन मरुध सूचि मं गुष्ठ वजा हट संस्का प्यलला न द्रव्य अ
वर्त वल न तु जामय अकृ नया हो इह वि मूदि रुद्र को ना ना दतः दध दिग लो क
धुस्तो कर्वथत् ॥ वीन या गिता मि ॥ पाघादि पूष्य बोध ॥ पं. लां चं मुनि ॥ ॥

२२

तता अलिकालि यनि धात च त्रु सूर्य स्य राव कन द्रु या न इकाने इह अन्था न्या नूग
ना सर्व धर्मा धा॥ अं य न स्य ना नूग ना सर्व धर्मा अं अन्था ना नूग ना प्रतिष्ठा सर्व ध
र्मा च त्रु सूर्य नु नूयं रं इकाने यनि धा म न वजा जलि उचि वि क च कृत कन द्रु य
न द मृ न रा द्धु नि वस्त्रा प्ये ध्वा त्वा म्वा वलि धि काना र्थ मि द य ध्वा त्वा ॥ द व प्र माने स
म य प्र माने स म य प्र माने न इ क वा च प्र मा धा ॥ च न न स स्य न रु वे य यु न ना द व्वा म
मानू य ह्नु उ तु त्वा ॥ रग वत इ रु व स्र कृ जि द्वा वि रा व्वा ॥ ॥ अं वे ज्ञा जलि उ रु व हे

[illegible]

कुरु समयन कुरु समय सर्वसिद्धि म प्रयच्छ कुरु यथेव यथेष्टं शुद्धं पावर्धति
 प्रथमं मागिक मर्थ सम सर्व सत्त्वानां च सर्व काने रूत या स सूर्य प्रवृद्धय स
 हायकारु व कुरु कुरु कुरु कुरु स्वाहा ॥ यं लोचं मृगि ॥ अनाकन ॥ ॥ नृनिधि
 सम्युद्धु चक्र सन्वले समोधि समाफम ॥ ॥ गुरु ॥ ० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

व.स.

१ नमः श्री कालाग्र्येः॥ ॥ ॐ श्रीः हं श्रीम वज्रसूत्रं नूतनं च नमस्तस्मात् सन्महा
नावरासनकनायतमाहं॥ वन्दे तवाधिसमग्रं सन्नाम यजुगीसयं सजुनूयत
प्रसादं नममायूहानसुमेवः॥ श्रीम वज्रजकाय जाकेनीचकुवर्हिनी॥ पञ्च
हान्तिकाशयशाययजुगानमः॥ यावन्नावज्रजकित्याकिन्नसकल्पवन्ध
ना॥ लाकाकल्पप्रवर्हिनी तावर्हिनी नमस्तदा॥ ॐ स्वरावसुधासर्वधर्मानां स्वरा
वसुधा हं तु यगाहानवज्रस्वरावात्मकाह॥ ॐ मणिप्राकानेधुपंगं मणिप्राकानेध

२४

आत्मनूयं॥ आकानेधसूर्यमधुल॥ सर्वसखाधनधहतावज्रवानाहीमात्मानेरा
वयगा॥ मनादक्रिष्टाहसुआः कानेधसूर्यमधुल॥ वामहसुआः कानेधचन्द्रमधुल
ॐ वं हीयां हीमां हं ही १ रुद्र २॥ कमलावरुमवाधिवानः॥ ॐ ॐ ॐ सर्ववृद्धजाकि
नीयवज्रवर्धनीयवज्रवेवाचनयहं हं हं रुद्र ३ स्वाहा॥ ॐ श्रीः वं हं रुद्र॥ ॐ स्वरा
वाहं हं सर्वविघ्नानुत्थानयहं॥ ॐ स्वरावाहं श्रीक्रमेन प्रगिरुहं स्वाहा॥ पञ्चमय
हानपूजाअधिवान॥ ॐ हः हाः ॐः श्रीः स्वराहा॥ पूनः पाठभूतपंगरावयग॥ ॐ का

ब.स.

: कान्तयमराजनेमां कान्तमामकी कृष्णां द्विजवज्रवज्रहस्तां हं कान्तमामकाय
 कृष्णां द्विजवज्रवज्रहस्तां न्यासं यूटया गनमहानागत उवीरुतं यरम्भत ॥ पू
 नः हः हाः जीः अरं स्वाहा ॥ ओं सर्वरुद्रकामिनी सर्वरुद्रभ्यो धनी गुप्तवज्री निष्कार
 भ्यो सर्वद्वयव्यापिनी रम्भय २ हं ॥ ओं अमृतं अमृतं नृपय प्रवेभ्यं य हं ॥ ओं हः
 कान्तं नृपवर्धु हाः कान्तगन्धतामनें जीः कान्तवीजं हन्ता त्वेभ्यो कान्तममृतं नृपय प्र
 वभ्यं य हं ॥ उपेता का हस्तं नमस्तुला विष्णवे ॥ ॥ पूं जं ओं अरं गं नां दं मां कां ओं जं

25

कां कां लं कां जी प्रै उं सां स्रं नं सिं मै कूं ॥ पां भय पीर भूकृणाय कृणु कृणु दया यच्छन्द मलायक मु
लाभुता नाय धम धमा त ॥ ओ वज्र नेख रुं रुं नटव रुं स्वाहा ॥ शुंग व्यामः ॥ ॥ ओ वै हं यां
जां मा ऊं जां रुं शुरु ॥ ओ स्वतम न कृणु ॥ ओ याग मे न कृणु ॥ ओ आस्तानु मे न कृणु ॥ नूय
स्कंध वेलाचनः ॥ वेदना स्कंध वज्र स्वर्यः ॥ संज्ञा स्कंध यत्न न रुं धवनः ॥ संज्ञा न
स्कंध वज्र नाडः ॥ विज्ञान स्कंध वज्र सत्वः ॥ सर्वतथागत त्व श्री हे नूक वज्रः ॥ च
इषामाह वज्री ॥ अथो द्वय वज्री प्राणायानी व्यावज्री नकुया नागवेज्री स्पर्ममास्

व.स.

र्यवजी.सर्वायलक्ष्मेश्वर्यवजी॥पृथिव्यादुयातनी.आयधुमानशी.नकाधुनाक
र्षणी.वायुधुयमनर्षणी.आकाशधुयमकालनी॥असृकृतिस्सृकृहंरुदि
सादि॥॥मदनीवजीरुववज्रवन्धु॥अवज्रयाकानवहं॥अवज्रविनानहंस्वहं
अवज्रयज्रलहंयहं॥अवज्रमनजालहं॥अवज्रकालानेलाहं॥अघघघाट
य२सर्वदुष्टानहं॥कीलय२सर्वयायानहंरुद॥वज्रकीलयवज्रधनआहा
पयतिस्सर्वविघ्नोविनायकानाकायवाकविरुदजनेकालयहं२रुद॥अवज्रमू

२३

मलोकादयहंरुद॥॥मितिनिर्विघ्नंरावयत॥स्वहृदिआकानधसूर्यमधुलंतद्रय
निर्वेकानधआलिकोलिहृयुधीरुतंतत्येनिहामधनानालाकधधुंगत्वास्त्वार्थ
कृत्वाअकृतिवृत्तुवेनाहंसिद्धिवज्रवानाहीमधुलदृष्टानुल्लानसंसिद्धिअक
लासीसुवचिन्नधुत॥गजयष्टायनिस्तित्वानाकृष्य॥अरु३पायादि॥॥
अःऊःहंवहाः॥अओं॥सर्ववज्रगकिनीयवज्रवर्षणीयवज्रवेनाचनीयहंरुद
रुदरुदरुदस्वाहा॥अवज्राःहंरुद॥मरध्व॥अआःगकिनीयहंरुद॥अलाभहंरुद

सं. व.

ॐ स्वस्ति वाहं रुद्र ॥ ॐ नृपि धीयं रुद्र ॥ ॐ वैवस्वता वाहीयं रुद्र ॥ ॐ या होयामि
नीयं रुद्र ॥ ॐ जमो माहिनीयं रुद्र ॥ ॐ जं जं संचामि धीयं रुद्र ॥ ॐ रुद्रं संज
सनीयं रुद्र ॥ ॐ रुद्रं च वृद्धिं रुद्र ॥ सर्वं वामावरुं ॥ ॐ आनेन सवरुं रुद्रं
रुद्र ॥ ४ ॥ वामावरुं न च रुद्रिभ्यः ॥ ॐ आः आठियो न रुद्रं रुद्र ॥ ॐ आः पूर्युगिनीयं रुद्रं
रुद्र ॥ ॐ आः कामनूयं रुद्रं रुद्र ॥ ॐ आः श्रीरुद्रं रुद्र ॥ ॐ आः धर्मकोयं रुद्रं
ॐ आः सम्रागकायं रुद्रं रुद्र ॥ ॐ आः निर्माद्यकायं रुद्रं रुद्र ॥ ॐ आः महासूयको

२१

यं रुद्र ॥ विदिगदकिं भवर्तन ॥ ॥ यथभयं पूजा ॥ वाउमलामा मुनि ॥ कालम
घयटलान्कना कलाविघ्नं दूग्घयटलाधिकलितं ॥ सत्वरुद्रं नयुगप्रदायिकां स्वानं
मामिऊगदम्बं रुद्रं ॥ १ ॥ नारिचक्रं रुद्रं वृणाभिनां वज्रवालिङ्गं सुङ्गं सक्कवा ना
॥ ॥ धसावनयाने नम्यतां स्वानं मामि वदवानललिवं ॥ २ ॥ मङ्गनय्यं ॥ ॐ नमो रु
गवत्पूजवा नाहीयं रुद्र ॥ ॐ नमो रुद्रं वृणाभिनां वज्रवालिङ्गं सुङ्गं सक्कवा ना
रुद्र ॥ ॐ नमः सर्वरुद्रं रुद्रं ॥ ॐ नमो वज्रासनं रुद्रं रुद्र ॥ ॐ नमो वज्रासनं रुद्रं रुद्र ॥

व. स.

नाजितुं वमं कवि नृजमनि हं २ रुद्र ॥ अंतमा विषयिभाचनि काटीन कनालिति हं रु
द्र ॥ अंतमः संज्ञासिति मानति मानो हिसू प्रहृदिनिय नाजय हं २ रुद्र ॥ अंतमा जयवि
जये जमृति स्मृति माहृति य हं २ रुद्र ॥ अंतमा वज्रवानाहि म हा यो गे ध्वनि का मं ध
निखर ग हं २ रुद्र ॥ ॥ हस्त पूजा ॥ अंतमा वज्रवानाहि य हं रुद्रि त्यादि ॥ ॥ यर चराय ह
न पूजा ॥ मृति ॥ यामित्यारवल माहिनी रु गवमी से चानिधी सर्वदा संज्ञासित्युक्त थय २८
नासो वमलाया गे ध्वनी च धुका ॥ चत्वारिंशु जय के स्वानन मूर्खी नीला सिंगार गो निधी

॥ अमा धृष्टा सधूसन च समतं वन्दयदं मा नदवं ॥ १ ॥ उत्साद रुंग नहिता वनद हृक्ष नी न
का प्रहा विजयनी छिध नूयिनी ॥ अंतमा वज्रवानाहि म हा यो गे ध्वनि का मं ध
मि सग म उत नी जिना ता ॥ २ ॥ मय्ये हा ॥ अंतमा वज्रवानाहि य हं रुद्रि त्या
दि ॥ ॥ याय दमना ॥ कन कानि कर्म नूमादि कर्म य मं रिवेल निह मं धा धा धां प्रति द
मयामि यू नमः यू नन कन धं सुम्बन विद धृष्टा व करव फुजिनी रु मजिन सुग संरुता नि
कुं मलानि अ नूमादि र्म निवा धी सन्य क य नि धा मयामि ए वजिन नला दि धि जय म न

व.स.

नद्यावत्तुगतास्त्रिंशत्सर्वरावतवारक्षोचिरुंविदधश्नूनमार्गतथास्थवत्पादियाग
ः॥ ॥ गदेनूमेरीकनूधमृदिनायकाचुर्वृक्तविहानाशावयन।। ३॥ स्वरावमुद्राः
सर्वधर्माः स्वरावमुद्राहं॥ मुन्यनांशुधिमिदं॥ गमाप्रतिधनवसागआकाशमग्नेन
वर्धुधर्मादयां॥ तनायकानधवायूमधुलंतोलागद्वयनिनंकानधमेनिमधुलम
द्वयनिनंकानधवायूमधुलंतद्वयनिनंकानधयध्वीमधुलचमुनमुचुवकी
रधध्वजांकिमंयीतगद्वयनिनंकानधसमनूकाचनसयंसदध्वजापरध्वजे

२८

३ आग्नेमरास्ताकारत्रिकोराचक्रं चतुकोराचक्रं

नं गद्वयनिनंकानधनकचतुःषष्टिदलयसंतद्वयनिनूः कानधसूर्यमधु
लं अकानधचतुमधुल॥ तस्मिन्धवकाटिचक्रंतद्वयनिनकदलयसंतद्वय
निनदलयसंतस्मिन्धविकाटिचक्रंतद्वयनिनंकानधविध्वयसंतस्मिन्ध
वधुवामीकानाननमितपीनतस्यहृदिआकानधसूर्यमधुलंतस्मिन्धवकान
धरुगवामीवज्रवानाहीनकवधुंमूककधमिदुजोदकिरहाहसनेदधदिगद
धनेरुहीवज्रकीर्णकां वाममुजंतनकधूरुधकयालधुकरवधोअधजायनक

व.स.

वर्तुलजितगंडद्याकनालधुवचधिनाननायचरमूडाविरुषिषीकलिकानूचकः
कुडुलमिनामधियक्षायवीजयचरकयालालकनरभवननीसार्धननमिनामा
लोधाविनीकोलात्याननीनकावर्तवामनरुमनी॥ नृपनीरुगवनीरावय
न॥ जाकिनीलामारवधुनाहानूयिणीककृष्णमनकयीमाः चरुगुजाप्रथम
जेजास्याकरिकयालंदिनीयासांउमनूरवेदांगंआलीरासनसंस्तिनामकम्
स्वायचरमूडाविरुषिषीवज्जवानाहीनकवधुंनिमूखाभूलमूरवन्नकां वाम

३०

धामांदक्रिदयीनांप्रतिमूरवन्दिनगंयचरमूडाविरुषिषीवज्जुजाप्रथमजुजासां
करिकयालरवदाप्रदिनीयासांनृमुधुयाभंगनीयासांउमनूरवधुंसाधननमिना
मालोधाविनीमालीरासनसंस्तिनां॥ यामिन्यामाहिनीसंजांस्तिनीसंचावणीहृरु
दृच्छिकानीलधुकेनकयीनस्यामधुमवधुंएकनूरवाचरुगुजाप्रथमजुजासां
करिकयालंदिनीयासांउमनूरवदाक्रमेचरमूडाविरुषिषीसार्धननमिनामालाध
विनीनकवधुनजितगंनृककभयचरकयालकनरभवनंआलीरासनसंस्तिनां

व.स.

न हृदि च उर्दि कृतं नावर्तं रुनेन सा वरुतां मधुलं विराग्यः ॥ अं वरुथा गनी काय वा क
चिरु वरुत्वा रा वा लको हं ॥ अं वरुत्वा रा वा लको हं ॥ अं वरुत्वा रा वा लको हं ॥ अं वरुत्वा रा वा लको हं ॥
अरिष कं प्रार्थयत ॥ स्वहृदि वं काने न नस्मि स्तुति त्वा आकारेण ला क धा मुस्ति तव
ज्वा ना ही स मा धु ले यं अना दिसं सिद्धि आ कथ्य ॥ पूर्व दा वरुत्वा रा वा लको हं ॥ अं वरुत्वा रा वा लको हं ॥
धो उरु ला क धा मुस्ति ॥ ॐ नमो महायागः ॥ ॥ तगा गु क्त न दा वरुत्वा रा वा लको हं ॥ अं वरुत्वा रा वा लको हं ॥
नि ना हि च कं रु दय चै क कथं च क ल सा त च क काल मूखा य नि त ना वरुत्वा रा वा लको हं ॥ अं वरुत्वा रा वा लको हं ॥

३१

पूतः काल मूखा य नि स्तु काल मूख न सा दि गु क्त च क रा व य न ॥ तगा रु दि वं काने न नस्मि
स्तुति त्वा रा वा लको हं ॥ अं वरुत्वा रा वा लको हं ॥ अं वरुत्वा रा वा लको हं ॥ अं वरुत्वा रा वा लको हं ॥
मरुत्वा रा वा लको हं ॥ पूर्व दा क र्व धा दि ॥ ॥ वलि ॥ तगा य का भे ध वा य मधु लं च ल त्प नां क
नं त द्र य नि नं का भे धा मि मधु ल ॥ उ का धं न क व र्त्तु नु क्ति नं नु द्र य नि मू धु मि न य
त स्म र्ध आः का न धा य म रा उ र्ने न त ग स्ति त या व द वू जं जे आ र व र्त्तु लां मा धा नां वं का
न य नि दानं य च म मू न य च प्र दी य नू य धा नि ध्या य य व न मधु लं रु नि तं कालि ना.

व.स.

प्रितायविलीनदुःखवीजाधिष्ठितदुःखनमिस्यव्यडेमरुनवादितादवाकनवर्द्धमासा
कया नदवर्द्धकानज्जनिताचितकिमाजाननावस्तिनश्रद्धामूरवामृत्तमयमुक्त
खदाप्रविशवयथन॥ तदाय्याविलीनामिधिययानेदनसंक्षेपहीरुनविचिन्तय
न॥ ॥ अकवर्द्धा॥ पूष्यमा॥ ॐ ॐ ॐ सर्ववृद्धजकितीर्थः ॐ त्यादि॥ ॥ अलि
कोलियनिधनं च उस्वर्यस्वरावकनद्वयानं दुःखानंदद्वय॥ ॐ ऐन्यात्मानूगता
सर्वधर्मा॥ ॐ यनस्य नानूगता सर्वधर्माः॥ ॐ अन्त्यात्मानूयविद्याः सर्वधर्माः ॐ

३२

[illegible]

व.स.

ॐ॥ वा३ अला॥ मुक्ति नर्प्य॥ ॐ॥ अ॥ अ॥ हं॥ २॥ रु॥ ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ रु॥ ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ रु॥ ॥
ॐ॥ म॥ म॥ हं॥ रु॥ ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ २॥ रु॥ ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ २॥ रु॥ ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ २॥ रु॥ ॥
ॐ॥ ति॥ म॥ रु॥ न॥ र्प्य॥ ॥ वी॥ ले॥ य॥ जी॥ ॥ ॥ यी॥ भ॥ दि॥ ये॥ ज॥ म॥ रु॥ सि॥ दि॥ प्र॥ अ॥ र्थ॥ य॥ न॥ ॥ यी॥ र॥ भ॥
ये॥ यी॥ भ॥ य॥ स्वा॥ हा॥ ॥ रु॥ ज॥ य॥ रु॥ ज॥ य॥ स्वा॥ हा॥ ॥ रु॥ द॥ य॥ रु॥ द॥ य॥ स्वा॥ हा॥ ॥ म॥ लो॥ ये॥ का॥ म॥
ला॥ य॥ स्वा॥ हा॥ ॥ म॥ म॥ नो॥ य॥ म॥ म॥ नो॥ य॥ स्वा॥ हा॥ ॥ ॥ यी॥ र॥ भ॥ य॥ यी॥ र॥ भ॥ रु॥ ज॥ य॥ रु॥ रु॥
दो॥ य॥ रु॥ न॥ म॥ ला॥ य॥ का॥ म॥ ला॥ म॥ न॥ वा॥ सि॥ नी॥ सर्व॥ रु॥ कि॥ न॥ प्र॥ द॥ मा॥ म्य॥ हं॥ ॥ ॥

३३

ग॥ ध॥ य॥ ग॥ म॥ नी॥ न॥ गु॥ द॥ प्र॥ य॥ का॥ य॥ वि॥ क॥ स्य॥ क॥ ल्या॥ र्जि॥ न॥ रु॥ ॥ नि॥ र॥ द॥ स॥ वा॥ नो॥ से॥ वा॥ स॥ वि॥ मु॥ क॥ मू॥
क॥ य॥ वि॥ रु॥ वा॥ वे॥ रु॥ वा॥ य॥ न॥ मा॥ मु॥ या॥ गि॥ नी॥ ॥ म॥ रु॥ न॥ र्प्य॥ ॥ ॥ ॥ नू॥ य॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥ ॐ॥ वि॥ द॥ ना॥
रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥ स॥ रु॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥ ॐ॥ स॥ रु॥ क॥ न॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥ ॐ॥ रु॥ क॥ न॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥ ॐ॥ रु॥ क॥ न॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥
रु॥ क॥ न॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥ रु॥ क॥ न॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥ रु॥ क॥ न॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥ रु॥ क॥ न॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥ रु॥ क॥ न॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ धं॥ ॥
२॥ द॥ वा॥ म॥ य॥ ना॥ वा॥ नू॥ क॥ या॥ ॥ ॥ उ॥ या॥ ना॥ ग॥ ल॥ च॥ रु॥ ना॥ नि॥ ल॥ धू॥ ना॥ वि॥ धू॥ रु॥ ना॥ ला॥ य॥ ना॥ य॥ ध॥
नि॥ शि॥ त॥ या॥ णि॥ लो॥ क॥ मा॥ ह॥ ना॥ यी॥ य॥ व॥ ध॥ ना॥ नू॥ ना॥ ॥ वू॥ रु॥ रु॥ न॥ न॥ सा॥ वि॥ ना॥ वि॥ क॥ ल॥ वा॥ स्वा॥ न॥

द.स.

नसदाहारावातावविचानधविनहिकावानाहीकापाशुवः॥मगाक्रना॥अं व
ऊवानाहीसमथमनूयालयवऊवानाहीतनायतिवृष्टामरुवसूताव्यामरुव
सूयाध्यामरुवअनूनकमरुवसर्वीसिद्धिमेषयच्छसर्वकर्मसूचिमुचिदुःखय
कुनूहहहहाःरुगवतीविऊवानाहीनाममूचवऊरीरुवसहासयमसल्लभ्याः॥
॥ ॥कमाये॥मरुहीनंक्रियाहीनविधिहीनंहुयहवेत॥नेक्रुमुहीसितहवीप
सादयनमध्वनी॥मिनेश्वरनलिफाझाध्वनयावनधमेवता॥वाध्वंगकूसमाकी

३४

[illegible]

व.स.

सुविह्वलं यथुस्त्रवं ॥ ॐ यागमुखाः सर्वधर्माः यागमुखाः ॥ ॐ वज्रमुखाः सर्वधर्माः
ः वज्रमुखाः ॥ ॐ हान ॥ ॥ हान सत्यत्वकीय प्रवक्ष्यममय सत्यस्वरावयना ॥
विमर्शः ॥ कर्मावः सर्वसत्त्वाथं सिद्धिं दत्वा यथानुगः ॥ गच्छ वज्रविषयं येन ना
यगमस्य च ॥ ॐ आः ह्र वज्रमधुलम् ॥ ॥ ॐ ति वज्रवानाहो देवी साधनांगयू
जाविधिसमाफाजीजनत् ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ गुरुं रूपो सर्वजगतां ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥ ३५

चक्षुलीचक्रं ॥ ॥ यः आनिर्माद्य चक्राद्यं काननूपिही ॐ ह्र विह्वलितानादा देवी नू
यामृष्टालनकुसुमानकनखार्चनं कायधर्मसंज्ञागच्छेत् क्रमूरिधमहासूरवमा
घनयाक्षालमुखमहासूरवमयस्वस्तिकं प्रवक्ष्यमहासूर्यचक्रगत्वा महाशालावलि
विलीतं नैरुद्धयुक्तं कुम्भवनमुवाप्तुं तदवस्थानान्नाययानि स्मृतं वाचि न्ययदः
विष्णुमथन ॥ आ. पा. पू. यं. ला. घ. मृत ॥ ॥ ततः सत्यकनमोर्गिरावितंगेलिय
चस्त्रचिके वज्रनूपयः काननसूर्यमाः कानाधिष्ठितं तथैव वा महसुगुलिवूपय

व.स.

दलाकानेधमः कानजं च उमः कानाधिदितां विराव्य ॥ गयामर्मध्वधुनाक्रस्रजं नथेवदवी
नूपास्तानसत्वेकीस्तनं विचिन्त्य ॥ अद्वलूकानूदात्रुध्वधुनाक्रस्रजं नथेवदवी
विभंरवः नयाउयदुम् ॥ अं यदं २ म हास्तानसर्ववूधमहंरवेन ॥ इहं इहं हाः अस्वत्वाहा
नूनिमनुमेधमधिदितां नमंरवादकनातिविचिन्त्ययूजयन ॥ नमास्तोयः ॥ आ. वा. यू. य. लो ३३
यं कुता ॥ ॥ नूनिमनुमेधमधिदितां नमंरवादकनातिविचिन्त्ययूजयन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

आ. वा. यू. य. लो

378

ADAM & BOWEN